

प्रचय (प्र), सन्नतर (स), ।

2

अनुदात्त ३, उदात्त १, स्वरित २ ।

प्रश्न:- साम गान की दृष्टि से स्वर मण्डल की क्या व्यवस्था है?

उत्तर:- साम गान की दृष्टि से स्वर मण्डल की व्यवस्था षड् विकार के रूप में है।

विकार, विश्लेषण, विकर्षण, अभ्यास, विराम तथा स्तोम।

१- विकारो यथा "अग्नि" इत्यस्य "ओग्नायि" इति।

२- विश्लेषण यथा "वीतये" इत्यस्य "वीतये तोया २ यि" इति।

३- विकर्षण यथा "ये" इत्यस्य "या २ ३ यि" इति।

४- अभ्यास इति पुनः पुनश्चचारो "तोया २ यि तोया २ यि" इति।

५- विरामो यथा "गृणानो हव्यदातये" इत्यस्य "गृणानोह । व्यदातये" इति।

"गृणानोह" इत्यस्य पदान्त स्वभावोपगान सौकर्यार्थं शब्द मध्य स्वर विशमादस्य विराम संज्ञा भवति।

६- स्तोमं ऋग्वल्लो वंशो यथा "ओ हो वा" इति।

प्रश्न:- ऋग्वेद तथा सामवेद का स्वरशङ्कन मन्त्र में किस प्रकार होगा?

उत्तर:- ऋग्वेद तथा सामवेद का स्वरशङ्कन एक ही मन्त्र में निम्नलिखित प्रकार से होगा।

अग्नि आ योहि वीतये गृणानो हव्यदातये ।

नि होता सति बहिर्वि ॥ ऋग्वेदीय स्वरशङ्कन ॥

अग्नि आ योहि वीतये गृणानो हव्यदातये ।

नि होता सति बहिर्वि ॥ सामवेदीय स्वरशङ्कन ॥

प्रश्न:- साम स्वरों का प्रयोग कैसे होता है?

उत्तर:- साम स्वरों का प्रयोग निम्नलिखित प्रकार से होता है।

अग्नि मीठे पुरोहितम्
अ उ स्व प्र अ उ स्व प्र
नी सा रे रे नी सा रे रे

पूर्ण संस्थान

खोदा, मेरठ (उ०प्र०)

१. प्रश्न :- सामवेद क्या है ?

उत्तर :- "गीतिषु सामाश्रव्या" । (लौ.सू. २।१।३६) ।
गीतिषु अर्थात् गीत जो ज्ञान बोले मन्त्रों की
साम संज्ञा है ।

गीत जो ज्ञान बोले मन्त्रों के समूह का नाम
सामवेद है ।

२. प्रश्न :- साम वेदान्त स्वर मण्डल कितना है ?

उत्तर :- सप्त स्वरः त्रयो ग्रामाः मूर्च्छनारत्नकः
विंशतीति ।

ताना स्वेकानपञ्चाशत इत्येतत्स्वरमण्डलम्

(सांख्यीय शिक्षायाः)

सात स्वर, तीन ग्राम (मूर्च्छन, स्वरकेनीन, ग्राम) तथा २९ मूर्च्छना हैं । सब मिलकर
४८ स्वर मण्डल हैं ।

३. प्रश्न :- सामवेद में गीत के लिए निम्नीलीरक्त स्वरों का निम्नीलीरक्त प्रकार है ?

मध्यम, गान्धार, भुवभ, बह्वज, निषाद, ध्रुवत
तथा पञ्चम ।

४. प्रश्न :- सामवेद में उच्चारण की दृष्टि से स्वराङ्ग का क्या क्रम है ?

उत्तर :- सामवेद में उच्चारण की दृष्टि से
स्वराङ्ग का क्रम निम्नीलीरक्त प्रकार है :-
उंकाच (उं), अनुधान (अ), रवीरित (स्व) ।